28

अपत्याधिकार प्रकरण

'तद्धिता:' इसके अधिकार में जो प्रत्यय आते हैं, उन प्रत्ययों क तद्धित नाम प्रख्यात होता है और भी हितभवादि विविध अर्थों में तद्धित प्रत्यय प्रयोग किए जाते हैं। अभी अपत्य अर्थ में विद्यमान तद्धित प्रत्ययों का विवरण करते हैं। अत एव इस प्रकरण का नाम अपत्याधिकार प्रकरण है। इस प्रकरण में न केवल अपत्य अर्थ में प्रत्यय होता है, अपितु हितभवादि अर्थ मंत भी प्रत्यय होते हैं। इस प्रकरण में अधिक रूप से अपत्य अर्थ में तद्धित प्रत्ययों के विधान से अपत्याधिकार प्रकरण यह नाम है। यहाँ तद्धिता: समर्थानां प्रथमाद्वा प्रत्यय: परश्च ये अधिकार सूत्र प्रत्यय विधायक सूत्र में आते हैं। अपत्यार्थ में विद्यमान तद्धित प्रत्यय का उदाहरण का गर्गस्य अपत्यं पुमान् यह लौकिक विग्रह होने पर अपत्य अर्थ में यञ्प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में गार्ग्य: यह रूप हुआ। और भी पुंसु भव: यह लौकिक विग्रह करने पर अपत्य भिन्न भव अर्थ में स्नञ्प्रत्यय करने पर प्रक्रिया कार्य में पौंस्न: यह रूप हुआ। अपत्यार्थ में विहित अण्, अञ्, इञ्, ठक्, फक्, ये प्रत्यय 'तद्धिता:' के अधिकार आते है:। और पुन: अपत्य अर्थ में प्रत्यय होते हैं, अत: हेतु से अपत्यार्थिक प्रत्यय कहते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- अपत्य अर्थ में विद्यमान प्रत्ययों को जान पाने में;
- अपत्यार्थभिन्न भवहितादि अर्थ में विद्यमान प्रत्ययों को भी जान पाने में;
- अपत्याधिकार में विद्यमान सूत्रों को जानने में योग्य होगें। लौकिक विग्रह और अलौलिक विग्रह को जान पाने में;

- अपत्याधिकार में विद्यमान सूत्रों के उदाहरण जान पाने में;
- तद्धित प्रत्यय के प्रयोग विषय को ज्ञात कर पाने में;
- अनुवृत्ति माध्यम से सूत्रार्थ कैसे होता है, यह स्पष्ट ज्ञान प्राप्त कर पाने में।

28.1 स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात् (५.१.८७)

सूत्रार्थ – धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ् इससे पूर्व अर्थ में स्त्री और पुंस शब्दों से क्रमशः तद्धित संज्ञक नञ् और स्नञ् प्रत्यय हो यह सूत्र का सामान्य अर्थ है।

सूत्रव्याख्या – यह अधिकार सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। स्त्री च पुमान् स्त्रीपुंसौ, ताभ्यां स्त्रीपुंसाभ्याम् यहाँ इतरेतर योग द्वन्द्व समास है। स्त्रीपुंसाभ्यां यह पञ्चमी द्विवचन का रूप है। नञ् च स्नञ् च इति नञ्स्नञौ यहाँ इतरेतर द्वन्द्व समास है। स्त्रीपुंसाभ्याम् यह प्रथमाद्विवचनान्त पद है। भवनात् यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है।

प्राग्दीव्यतोऽण् यहाँ से प्राग् की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः, परश्च ङ्याप्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। यह अधिकार सूत्र है। अतः भवनात् यह पद तो अवधि के लिए स्वीकार किया गया है। अतः सूत्रार्थ होता है – धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ् इससे पूर्व अर्थों में स्त्री और पुंस शब्दों से क्रमशः तद्धित संज्ञक नञ् और स्नञ् प्रत्यय हो सूत्र का सामान्य अर्थ है।

उदाहरण –

स्त्रीषु भवः स्त्रिया अपत्यम्। स्त्रीणां समूहः स्त्रीभ्यः आगतः स्त्रीभ्यो हितः यह लौकिक विग्रह होने पर स्त्री ङस् यह अलौकिक विग्रह है। वहाँ भवहितापत्यादि अर्थों में स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात् इस अधिकार सूत्र से तस्यापत्यम् इत्यादि उस सूत्र से नञ् प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप होने पर स्त्री ङस् न यह स्थिति होती है। अय समुदाय तद्धितान्त है। अतः कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। तत्पश्चात् 'सुपो प्रातिपदिकयोः' इस सूत्र से सुप् का लोप होने पर स्त्री न यह स्थिति हाती है। तत्पश्चात् तद्धितेष्वचामादेः इस सूत्र से स्त्री शब्द के आदि अच् ईकार की वृद्धि ऐकार होने पर 'स्त्रै न' होता है। इसके पश्चात् अटकुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इस सूत्र से णत्व होता है। तत्पश्चात् एकादेश विकृतमनन्यवत् इस सूत्र से प्रतिपादक संज्ञा होती है। तत्पश्चात् विभक्ति कार्य करने पर 'स्त्रैणः' यह रूप बनता है।

इस प्रकार ही पुंसोऽपत्यम् पुंसु भवः पुंसां समूहः पुंभ्यः आगतः, पुंभ्यो हितः यह विग्रह होने पर भवहितापत्यादि अर्थों में स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात् इस अधिकार सूत्र से तस्यापत्यम् इत्यादि से तत् सूत्र से स्नञ् प्रत्यय होने पर पुंस ङस् स्न होता है। स्नञ् प्रत्यय की तद्धितान्त होने से प्रातिपदिक संज्ञा होती तत्पश्चात् सुप् लोप होने और आदिवृद्धि होने पर पौंस स्न यह स्थिति होती है। इसके पश्चात् 'संयोगान्तस्य लोपः' इस पदान्त संकर के लोप होने पर पौं स्न यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् विभक्ति कार्य होने पर निमित्तापाये नैमित्तिकस्यापायः इस परिभाषा के अनुसार अनुस्वार का मकार

टिप्पणियाँ

होता है। तत्पश्चात् नश्चापदान्तस्य झलि इस सूत्र से पुनः मकार के अनुस्वार में विभक्ति कार्य होने पर पौंस्नः यह रूप होता है।

28.2 तस्याऽपत्यम् (४.२.९२)

सूत्रार्थ – षष्ठ्यन्त कृतसन्धि समर्थ पद से अपत्य अर्थ में पूर्वोक्त और आगे कहे जाने वाले प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। तस्य यह पञ्चम्यन्त पद है। तस्य यहाँ षष्ठ्यन्त शब्द से पञ्चमी आयी है उसका पञ्चम्याः सूत्र से अदर्शन होता है। अपत्यम् यह सप्तम्यन्त पद है। यहाँ भी अपत्यम् इस शब्द से सप्तमी आयी है। उसका भी 'सप्तम्याः' सूत्र से अदर्शन होता है। अर्थात् सूत्र में विभक्तियों का लोप और विपरिणाम हुआ है। अतः प्रकृत सूत्र में सौत्रत्व होने से पञ्चमी और सप्तमी का लुक् होता है, दूसरे ग्रन्थों में।

तद्धित की उत्पत्ति सुबन्त से होती है। अतः समर्थः पदविधिः इस परिभाषा से समर्थात् यह पद प्राप्त होता है। प्राग्दीव्यतोऽण् इससे अण् की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः परश्च ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः ,समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। पुनः प्रकृत सूत्र में तस्य, अपत्यं यह पद स्वरूप बोधक नहीं है, अपितु अर्थबोधक है। अतः सूत्रार्थ होता हैं – षष्ठ्यन्त कृतसन्धि समर्थ पद से अपत्यार्थ में पूर्वोक्त और आगे कहे जाने वाले प्रत्यय हो।

उदाहरण – उपगोः अपत्यम् यह लौकिक विग्रह है। उपगु ङस् यह अलौकिक विग्रह है। तस्यापत्यम् इस सूत्र से अपत्य अर्थ में प्राग्दीव्यतोऽण् इस सूत्र से अण् प्रत्यय का विधान होता है। अनुबन्ध लोप करने पर 'उपगु ङस् अ यह स्थिति होती है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होती है। सुप्लोप होने पर उपगु अ यह स्थिति होने पर तद्धितेष्वचामादेः इस सूत्र से आदि वृद्धि होती है। तब औपगु + अ यह स्थिति होती है –

28.3 ओर्गुणः (६.४.१४६)

सूत्रार्थ – उवर्णान्त भसंज्ञक अङ्ग को गुण हो तद्धित परे।

व्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। ओः यह षष्ठ्यन्त पद है। गुण यह प्रथमान्त पद है। भस्य, अङ्गस्य ये दोनों अधिकार सूत्र आये हैं। नस्तद्धिते इस सूत्र से 'तद्धिते' इसकी अनुवृत्ति हुई है। ओः यह उवर्ण की षष्ठी एकवचन का रूप है। ओः यह भसंज्ञक औ अङ्ग को विशेषण होने से येन विधिस्तदन्तस्य इस सूत्र से विशेषण उवर्ण का तदन्त विधि में उवर्णान्त का यह अर्थ प्राप्त होता है। अतः सूत्रार्थ होता है –

उदाहरण – औपगु + अ यह स्थिति होने पर यचिभम् इस सूत्र से औपगु इसकी भसंज्ञा है। और पुनः उपगु शब्द से प्रत्यय विधान होने से उपगु इसकी अङ्ग संज्ञा भी होती है। और अण् यह प्रत्यय 'तद्धिताः' के अधिकार में विद्यमान होने से अण् की तद्धितसंज्ञा होती है। अतः ओर्गुणः इस सूत्र से 'औपगु अ' यहाँ तद्धित संज्ञा विशिष्ट होने पर अण् प्रत्यय परे रहते अङ्गसंज्ञा विशिष्ट

भसंज्ञक के उवर्णान्त का गुण ओकार होता है। तब औपगो अ यह स्थिति हुई। तत्पश्चात् एचोऽयवायावः इस सूत्र से ओकार का अवादेश प्रकिया कार्य होने पर 'औपगवः' यह रूप हुआ।

28.4 अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम् (४.१.१६२)

सूत्र-अर्थ – पौत्रादि को अपत्य कहना इष्ट हो तब उनकी गोत्र संज्ञा होती है।

सूत्रव्याख्या – यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। सभी पद प्रथमान्त है। इस सूत्र का अर्थ होता है – अपत्य विवक्षित होने से पौत्रादि की गोत्र संज्ञा हो। 'तस्यापत्यम्' इससे अपत्य विद्यमान होने पर पुनः पौत्रादि का अपत्य विवक्षा में अपत्य ग्रहण है गोत्रत्व अर्थ बोध के लिए ही है। यदि पौत्रादि की पौत्रत्वादि की विवक्षा नहीं होती अर्थात् यदि पौत्र प्रपौत्र आदि की अपत्य रूप से विवक्षा होती है तो पौत्र – प्रपौत्रादि की गोत्र संज्ञा होती है।

28.5 एको गोत्रे (४.१.९३)

सूत्र-अर्थ – गोत्र अर्थ में एक ही अपत्य प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। पद प्रथमान्त है। गोत्रे यह सप्तम्यन्त है।

अपत्याधिकार और प्रत्ययाधिकार के सामर्थ्य से अपत्यप्रत्यय आता है। ङ्यप्प्रातिपदिकात् ,प्रत्ययः,परश्च ये अधिकार सूत्र आते हैं। यहाँ एकः इस कथन से अन्य संख्या के व्यवच्छेद होने से एक ही नियम प्राप्त होता है। अतः सूत्रार्थ होता है – गौत्र अर्थ में एक ही अपत्य प्रत्यय हो।

उदाहरण – उपगोः अपत्यम् औपगवः, तस्य औपगवस्य अपि अपत्यम् उस औपगव का भी अपत्य औपगवः, उसका भी अपत्य औपगवः इसी प्रकार आगे भी। अर्थात् मूलपुरुष से किया गया अपत्य प्रत्यय गोत्रत्व विवक्षित सभी पौत्रप्रपौत्रादि का बोधक है। प्रत्येक वंश में तो नवीन प्रत्यय नहीं 'होता है' इस प्रकार यथा उपगोः अपत्यम् औपगवः।

जैसे उपगोः का अपत्य औपगवः है वैसे औपगव का भी अपत्य औपगवः ही है।

पाठगत प्रश्न 28.1

1. नञ्प्रत्यय विधायक सूत्र कौन सा है?
2. स्त्रीपुंसाभ्याम् यहाँ कौन सा समास है?
3. 'तस्यापत्यम्' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
4. गोत्रसंज्ञाविधायक सूत्र कौन सा है?
5. ओर्गुणः यह सूत्र क्या विधान करता है?
6. एको गोत्रे इस सूत्र का अर्थ क्या है?

टिप्पणियाँ

28.6 गर्गादिभ्यो यञ् (४.१.१०५)

सूत्रार्थ – गर्गादि गण में पठित शब्दों से गोत्रापत्य अर्थ में तद्धितसंज्ञक यञ् प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। गर्ग शब्द जिनके आरम्भ में है (गर्गशब्दः आदिर्येषां ते गर्गादयः) पञ्चमी में गर्गादिभ्यः तद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहि समास है। गर्गादिभ्यः यह पञ्चम्यन्त पद है। यञ् यह प्रथमान्त है।

'गोत्रे कृञ्तादिभ्यश्चफञ्' यहाँ से 'गोत्रे' यह अनुवर्तित होता है। तस्यापत्यम् यहाँ से अपत्यम् यह अनुवर्तित होता है। उसका विभक्ति विपरिणाम होने पर अपत्ये यह प्राप्त होता है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। अतः सूत्रार्थ होता है – गर्गादि गण में पठित शब्दों से गोत्रापत्य अर्थ में तद्धितसंज्ञक यञ् प्रत्यय हो।

उदाहरण – 'गर्गस्य गोत्रापत्यम्' यह लौकिक विग्रह होने पर गर्ग + ङस् यह अलौकिक विग्रह है। गर्ग शब्द गर्गादि गण में पठित है। अतः गर्गादिभ्यो यञ् सूत्र से यञ् प्रत्यय का विधान होता है। तत्पश्चात् अनुबन्धलोप होने पर गर्ग ङस् य यह स्थिति होती है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः कृतद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। इसके बाद सुपो धातुप्रातिपदिकयोः सूत्र से सुप् का लोप होत है। उसके बाद तद्धितेष्वचामादेः सूत्र से गर्ग इस समुदाय के आदि अकार की वृद्धि होने पर गार्ग य यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् यस्येति च सूत्र से गकारोत्तरवर्ती अकार का लोप होकर विभक्ति कार्य होने पर गार्ग्यः यह रूप हुआ। इसी प्रकार की वत्सस्य गोत्रापत्यं वात्स्यः इत्यादि।

28.7 यञञोश्च (२.४.६४)

गोत्र अर्थ में जो यञन्त और अञन्त है उनके अवयव (यञ् और अञ्) का लोप हो, यदि उन्हीं के अर्थ अर्थात् (अर्थात् गोत्र का) बहुत्व विवक्षित हो, किन्तु स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। यञ् च अञ् च यञञौ, तयोः यञयोः यह इतरतरयोग द्वन्द्व है। यञञोः यह षष्ठ्यन्त है। च यह अव्यय पद है।

ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः यहाँ से लुक्, यस्कादिभ्यो गोत्रे यहाँ से गोत्रे तद्राजस्य बहुषु तेनैवाऽस्त्रियाम् यहाँ से बहुषु तेन, एव अस्त्रियाम् इन पदों की अनुवृत्ति होती है। अतः सूत्रार्थ होता है – गोत्र अर्थ में जो यञन्तं और अञन्त है उनके अवयव (यञ्, और अञ्) का लोप हो यदि उन्हीं के अर्थ (अर्थात् गोत्र का) बहुत्व विवक्षित हो, किन्तु स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता।

उदाहरण – गर्गस्य गोत्रापत्यम् यह विग्रह है। तत्पश्चात् प्रकृतसूत्र से यञ् प्रत्यय करने पर गर्ग + यञ् स्थिति है। और यह यञन्त है, बहुत्वविशिष्ट है, और स्त्रीलिङ्ग भिन्न है अतः गोत्र में जो यञन्त है उसके अवयव का लोप होने पर प्रक्रिया कार्य में गार्गाः यह रूप हुआ।

28.8 जीवति तु वंश्ये युवा (४.१.१६३)

अर्थ – वंश में पितृ आदि के जीवित रहने पर पौत्रादि के अपत्य हो चौथी पीढ़ी में, उसकी युव संज्ञा हो।

सूत्रव्याख्या – यह सूत्र संज्ञासूत्र है। इस सूत्र में चार पद है। जीवति यह सप्तमी एकवचनान्त है। तु यह अव्यय पद है। वंश्ये यह सप्तमी एकवचनान्त है। युवा यह प्रथमान्त है। अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम् यहाँ से पौत्रप्रभृति तस्याऽपत्यम् यहाँ से अपत्यम् इन दो पदों की अनवृत्ति होती है। वंश में उत्पन्न हुए वंश्य अर्थात् पिता, पितामह आदि। अतः सूत्रार्थ होता है – वंश में हुए पिता, पितामह के जीवित रहते जो पौत्र आदि का अपत्य हो चौथी पीढ़ी आदि में, उसकी युव संज्ञा हो।

उदाहरण – मूलपुरुष वंश प्रवर्तक प्रथम है। मूलपुरुष का पुत्र द्वितीय है। मूलपुरुष का पौत्र तृतीय है, मूलपुरुष का प्रपौत्र चतुर्थ है। यदि पिता, पितामह और प्रपितामह के जीवित होने पर चतुर्थादि (प्रपौत्र) की युवसंज्ञा होती है। यह संज्ञा गोत्र संज्ञा का अपवाद है।

28.9 गोत्राद्यून्यस्त्रियाम् (४.१.९४)

सूत्रार्थ – युवापत्य में गोत्र प्रत्ययान्त से ही प्रत्यय हो, स्त्रीलिङ्ग में तो युव संज्ञा न हो।

सूत्रव्याख्या – यह नियम सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। गोत्रात् यह पञ्चमी एकवचनान्त है। यूनि यह सप्तमी एकवचनान्त है। अस्त्रियाम् यह सप्तमी एकवचनान्त है।

युवा अपत्य अर्थ में प्रत्यय होता है, वह गोत्र प्रत्ययान्त से ही होता न कि मूल प्रकृति से। अतः सूत्रार्थ होता है – युवाऽपत्य अर्थ में गोत्र प्रत्ययान्त से ही प्रत्यय हो, स्त्रीलिङ्ग में युवाऽपत्य संज्ञा न होती।

उदाहरण – उपगोः अपत्यम् यहाँ तस्यापत्यम् इस सूत्र से औत्सर्गिक अण् प्रत्यय होने पर औपगवः यह हुआ। तब युवापत्य अर्थ में अत इञि इससे इञ् प्रत्यय होने, अनुबन्ध लोप और प्रक्रिया कार्य होने पर औपगविः यह रूप हुआ।

28.10 यञिञोश्च (४.१.१०१)

सूत्रार्थ – गोत्र अर्थ में जो यञ् और इञ् प्रत्यय है, तदन्त शब्द से फक् प्रत्यय से युवापत्य अर्थ में।

उदाहरण – गर्गस्य गोत्रापत्यम् यह लौकिक विग्रह है। उसके बाद गर्ग ङस् यह स्थिति होने पर पहले गर्गादिभ्यो यञ् इस सूत्र से गोत्रापत्य में यञ् करने पर गार्ग्यः यह बना। तत्पश्चात् गोत्राद यून्यस्त्रियाम् इस नियम से युवापत्य अर्थ में यञिञोश्च सूत्र से फक् प्रत्यय का विधान होता है।

तब अनुबन्ध लोप होने तद्धितान्तत्व से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुब्लोप होने पर 'आयनेयीनीयिय:फढखछघां प्रत्ययादीनाम् इस सूत्र से फकार के स्थान पर आयनादेश होता है।

टिप्पणियाँ

तब गार्ग्य + आयन यह स्थिति होने पर यस्येति च से अकार लोप होने पर अट्कुप्वा. सूत्र से णत्व होकर विभक्ति कार्य होने पर 'गार्ग्यायणः' यह रूप हुआ।

28.11 अत इञ् (४.१.९५)

सूत्रार्थ – जो प्रातिपदिक अदन्त है, उसकी इञ् हो अपत्य अथ में।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। अतः यह पञ्चम्यन्त पद है, इञ् यह प्रथमान्त पद है।

तस्याऽपत्यम् यह सम्पूर्ण सूत्र अनुवर्तित होता है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते है। अतः यह प्रातिपदिक का विशेषण है। अतः विशेषण का येन विधिस्तदन्तस्य सूत्र से तदन्त विधि से अदन्तात् (अदन्त से) प्राप्त होता है। अतः सूत्रार्थ है – जो प्रातिपदिक अदन्त है, उसकी षष्ठ्यन्त प्रकृति से इञ् हो, अपत्यार्थ में।

उदाहरण – दक्षस्य अपत्यं पुमान् यह लौकिक विग्रह है। दक्ष ङस् यह स्थिति होने पर दक्ष यह अदन्त प्रातिपदिक है। अतः अपत्य अर्थ में अत इञ् सूत्र से इञ् प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्ध लोप होने पर तद्धितत्व से प्रातिपदिक संज्ञा होने सुब्लोप पर दक्ष + इ यह स्थिति होती है। तब दक्ष यहाँ दकारोत्तरवर्ती अकार की आदिवृद्धि और षकारोत्तर अकार का लोप होता है। तब विभक्ति कार्य करने पर दाक्षि यह रूप हुआ।

28.12 बह्वादादिभ्यश्च (४.१.९६)

सूत्रार्थ – बह्वादि गण में पठित शब्दों से अपत्य अर्थ में इञ् प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में पद द्वय है। बाहुशब्दः आदिः येषां ते बाह्वादयः तेभ्यः बाह्वादिभ्यः इस प्रकार तद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहि समास हुआ। बाह्वादिभ्यः यह पञ्चम्यन्त है। चेति यह अव्ययपद है।

अत इञ् यहाँ से इञ् की अनुवृत्ति होती है। तस्याऽपत्यम् इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति होती है। परश्च, प्रत्ययः, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, ये अधिकार सूत्र आते है। अतः सूत्रार्थ होता है – बाह्वादि गण में पठित शब्दों से अपत्य अर्थ में इञ् प्रत्यय होता है।

उदाहरण – बाहोः अपत्यम् यह लौकिक विग्रह है। उसके बाद बाहु ङस् इस स्थिति में बाहु शब्द का बाह्वादिगण में पाठ है। अतः अपत्य अर्थ में बाह्वादिभ्यश्च इस सूत्र से इञ् प्रत्यय होकर अनुबन्ध लोप होने पर बाहु ङस् इ यह स्थिति हुई। यह समुदाय तद्धितान्त है। उसके बाद प्रातिपदिक संज्ञा होकर सुप् का लोप होने पर बाहु + इ यह स्थिति होती है। तब बाहु यहां बकारोत्तर अकार की आदिवृद्धि होती है। तब ओर्गुणः सूत्र से उकार का गुण ओकार होता है। तत्पश्चात् 'एचोऽयवायावः' सूत्र से अवादेश होने व विभक्ति कार्य होने पर बाहविः यह रूप होता है। इस प्रकार औडुलोमिः यहाँ भी इञ् प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में रूप होते हैं।

पाठगत प्रश्न 28.2

1. गर्गादि से कौन सा प्रत्यय होता है?
2. यञञोश्च इस सूत्र का अर्थ क्या है?
3. युवसंज्ञाविधायक सूत्र कौन सा है?
4. फक्-प्रत्यय विधायक सूत्र कौन सा है?
5. दाक्षिः यहा कौन सा प्रत्यय है?
6. बह्वादि से कौन सा प्रत्यय होता है?

28.13 शिवादिभ्योऽण्

सूत्र अर्थ – शिवादिगण में पठित प्रातिपदिकों से अपत्य में अण् प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। शिव शब्दः आदिः येषां ते शिवादयः, तेभ्यः शिवादिभ्यः यहाँ तद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहि समास है। शिवादिभ्यः यह पञ्चम्यन्त है। अण् यह प्रथमान्त पद है।

तस्याऽपत्यम् यहाँ से अपत्यम् इसकी अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। अतः सूत्रार्थ होता है – शिवादि गण में पठित प्रातिपदिकों से अपत्य अर्थ में अण प्रत्यय के उदाहरण – शिवस्य अपत्यम् यह लौकिक विग्रह है। शिव ङस् स्थिति में शिव का शिवादिगण में पाठ है। अतः अपत्य अर्थ में शिवादिभ्योऽण् सूत्र से अण् -प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप होने पर शिव ङस् अ यह स्थिति हुई। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः प्रातिपदिक संज्ञा सुब्लोप होने पर शिव+अ यह स्थिति होती है। तब शिव यहाँ शकारोत्तर इकार की और वकारोत्तर अकार का लोप होता है। तब शैव् अ स्थिति होने पर विभक्ति कार्य होकर शैवः यह रूप बना। इसी प्रकार ही गाङ्गः यहाँ भी होता है।

28.14 ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च (४.१.११४)

सूत्रार्थ – ऋषि, अन्धक, वृष्णि और कुरु इनसे अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय हो।

व्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस में दो पद है। ऋषयश्च, अन्धकाश्च, वृष्णश्च, कुरवश्च, ऋष्यन्ध, कवृष्णिकुरवः, तेभ्यः ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्चः यहाँ इतरेतर द्वन्द्व समास है। ऋ. यह पञ्चम्यन्त है। च यह अव्यय पद है।

तस्याऽपत्यम् यह सम्पूर्ण सूत्र अनुवर्तित होता है। प्रत्ययः,परश्च,ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार सूत्र आते हैं। अतः सूत्र का अर्थ होता है- ऋषि, अन्धक, वृष्णि और कुरु इनसे अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय हो।

टिप्पणियाँ

उदाहरण – वसिष्ठस्य अपत्यम् यह लौकिक विग्रह है। वसिष्ठ ङस् स्थिति में वसिष्ठ यह ऋषिवाचक प्रतिपादक है। अतः अपत्य अर्थ में ऋ. सूत्र से अण् प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप् करने पर वसिष्ठ ङस् अ यह स्थिति होती है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः समुदाय की प्रातिपदिक संज्ञा व सुब्लोप होने पर वसिष्ठ अ यह स्थिति हुई। तब वसिष्ठ के वकारोत्तर अकार की वृद्धि में आकार होता है। तत्पश्चात् वसिष्ठ के ठकारोत्तर अकार का लोप होकर विभक्ति कार्य और वर्णमेलन होने पर वासिष्ठः यह रूप बना।

इस प्रकार ही इस सूत्र से अधिक वंश में श्वफल्क का, वृषिण वंश में वासुदेव का, कुरुवंश में नकुल का अन्तर्भाव होता है। अतः इन प्रतिपदिकों से अपत्य अर्थ में ऋष्य. सूत्र से अण् प्रत्यय होता है। उसके बाद प्रक्रिया कार्य होने पर श्वफल्कः, वासुदेवः, नकुलः इत्यादि रूप सिद्ध होते है।

28.15 स्त्रीभ्यो ढक् (४.१.१२०)

सूत्रार्थ – स्त्रीप्रत्ययान्त से अपत्य अर्थ में ढक् प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। स्त्रीभ्यः, यह पञ्चम्यन्त पद है। ढक् यह प्रथमान्त पद है।

तस्याऽपत्यम् यहाँ से 'अपत्यम्' की अनुवृत्ति होती है। उसका विभक्ति परिणाम होने से अपत्ये यह रूप है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः ये अधिकार सूत्र आते हैं। स्त्रीभ्यः इससे 'टाप्', ङीप्, इत्यादि ग्रहण इष्ट है। प्रत्यय ग्रहण होने पर तदन्ताः ग्राह्याः इस परिभाषा से स्त्रीप्रत्ययान्तों की प्राप्ति होती है। अतः सूत्रार्थ होता है – स्त्री प्रत्ययान्त शब्दों से अपत्य अर्थ में ढक् प्रत्यय हो।

उदाहरण – विनतायाः अपत्यम् यह लौकिक विग्रह है। विनता ङस् इस स्थिति में विनता यह टाप् प्रत्ययान्त है। अतः अपत्य अर्थ में स्त्रीभ्यो ढक् इस सूत्र से ढक् – प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्ध लोप करने पर प्रातिपदिक संज्ञा और सुब्लोप होता है। तब विनता ढ इस स्थिति में किति च इस सूत्र से आदि वृद्धि होती है। उसके बाद 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् इस सूत्र से ढकार का एयादेश होता है। उसके बाद यस्येति च इस सूत्र से आकार का लोप होने और विभक्ति कार्य होने पर वैनतेयः यह रुप बनता है।

28.16 कन्यायाः कनीन च (४.१.११६)

सूत्रार्थ – कन्या शब्द से अपत्य अर्थ में कनीन आदेश हो और प्रकृति से अण् हो।

सूत्रव्याख्या – इय विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। कन्यायाः यह षष्ठ्यन्त है कनीन यह लुप्त प्रथमान्त है। च यह अव्ययपद है।

इस सूत्र में शिवादिभ्योऽण् यहाँ से अण् की अनुवृत्ति होती है। तस्यापत्यम् यह सम्पूर्ण सूत्र अनुवर्तित होता है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, ये अधिकार सूत्र आते है। अतः सूत्र का अर्थ होता है– कन्या शब्द से अपत्य अर्थ में कनीन आदेश हो और प्रकृति से अण् हो।

उदाहरण – कन्यायाः अपत्यम् यह लौकिक विग्रह है। 'कन्या ङस्' इस स्थिति में अपत्य अर्थ में कन्यायाः कनीन च इस सूत्र से कन्या प्रकृति को कनीनादेश और अण् प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्ध लोप होने पर कनीन + अ यह स्थिति होती है। यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः प्रातिपदिक संज्ञा एवं सुप् का लोप होता है। तत्पश्चात् आदिवृद्धि अकार लोप होकर विभक्ति कार्य होने पर कानीनः यह रूप बना।

28.17 राजश्वशुराद्यत् (४.१.१३७)

सूत्रार्थ – राजन् और श्वसुर प्रातिपदिक से अपत्य अर्थ में यत् प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। राजा च श्वशुरश्च राजश्वशुरम् तस्मात् राजश्वशुरात् यह समाहारद्वन्द्व है। राजश्वशुरात् यह पञ्चम्यन्त पद है। यत् यह प्रथमान्त पद है।

तस्यापत्यम् यह सम्पूर्ण सूत्र अनुवर्तित होता है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, ये अधिकार सूत्र आते है। अतः सूत्रार्थ होता है। – राजन् और श्वसुर प्रातिपदिक से अपत्य अर्थ में यत् प्रत्यय हो। यहाँ राज्ञो जातावितेि वाच्यम् यह वार्तिक है। अर्थात् राजन् प्रतिपादिक से जाति वाच्य होने पर ही यत् होता है।

28.18 ये चाऽभावकर्मणः (६.४.१३८)

सूत्रार्थ – यकारादि तद्धित प्रत्यय परे रहते अन् को प्रकृतिभाव हो, परन्तु भाव और कर्म अर्थ में न हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। ये यह सप्तम्यन्त पद है। य यह अव्यय पद है। भावश्च कर्म च भावकर्मणी तयोः भावकर्मणोः, न भावकर्मणोः यह द्वन्द्व गर्भ नञ् तत्पुरुष समास है। अभावकर्मणोः यह सप्तम्यन्त पद है।

अन् यह सम्पूर्ण सूत्र आपत्यस्य च तद्धितेऽनाति यहाँ से तद्धिते और प्रकृत्यैकाच् यहाँ से प्रकृत्या अनुवर्तित होते है। अङ्गस्य यह अधिकार में पढ़ा गया है। अतः प्रत्यये यह पद प्राप्त होता है। ये यह प्रत्यये इसका विशेषण है अतः इस विधि से यादि प्रत्यय परे रहते यह अर्थ प्राप्त होता है अतः सूत्रार्थ होता है –यकारादि तद्धित प्रत्यय परे रहते अन् को प्रकृतिभाव हो, परन्तु भाव और कर्म अर्थ में न हो।

उदाहरण – राज्ञः अपत्यम् जातिः यह लौकिक विग्रह है। राजन् ङस् स्थिति में अपत्य अर्थ में क्षत्रिय जाति वाच्य होने पर 'राजश्वशुराद्यत' सूत्र से यत् प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्ध लोप करने पर यह समुदाय तद्धितान्त है। अतः प्रातिपदिक संज्ञा होने व सुप् लोप होने पर राजन् + य यह स्थिति होती है। तब यचिभम् इससे भ संज्ञा होती है। तत्पश्चात् नस्तद्धिते सूत्र से अन् के लोप की प्राप्ति होती है। तब ये चाऽभावकर्मणोः इस सूत्र से यादि तद्धित परे रहते अन् का प्रकृतिभाव होने से लोप नहीं होता है। तब वर्ण मेलन और विभक्ति कार्य होने पर राजन्यः यह रूप हुआ।

29.19 क्षत्राद् घः (४.१.१३८)

क्षत्र शब्द से अपत्य अर्थ में **तद्धितसंज्ञक** घ प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। क्षत्राद् यह पञ्चम्यन्त पद है। घः यह प्रथमान्त पद है।

तस्याऽपत्यम् यहाँ से अपत्यम् की अनुवृत्ति आती है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, ये अधिकार सूत्र आते हैं। अतः सूत्रार्थ होता है – यहाँ भी क्षत्र प्रातिपदिक से जाति वाच्य होने पर ही घ प्रत्यय होता है, अन्यथा नहीं।

उदाहरण – क्षत्रस्य अपत्यं जातिः यह लौकिक विग्रह है। क्षत्र ङस् यह स्थिति में क्षत्रप्रातिपदिक का जाति में गम्यमान होने पर अपत्य अर्थ में क्षत्रात् घः सूत्र से प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् क्षत्र ङस् घ इस स्थिति में तद्धितान्त होने से प्रातिपदिकसंज्ञा और सुप् का लोप होता है। तत्पश्चात् आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् इस सूत्र से घकार को इयादेश होने पर क्षत्र इय् यह स्थिति है। उसके बाद क्षत्र इसके ककारोत्तर अकार का लोप होता है। तब विभक्ति कार्य होने पर क्षत्रियः यह रूप बना।

पाठगत प्रश्न 28.3

1. शैवः यहाँ कौन सा प्रत्यय है?
2. वासिष्ठः यहाँ किस सूत्र से कौन सा प्रत्यय हुआ है?
3. स्त्री प्रत्ययान्त से कौन सा प्रत्यय होता है?
4. कन्या से कौन सा आदेश और कौन सा प्रत्यय होता है?
5. क्षत्र प्रातिपदिक से कौन सा प्रत्यय होता है?
6. ये चाभावकर्मणोः सूत्र का क्या अर्थ है?

28.20 रेवत्यादिभ्यष्ठक् (४.१.१४६)

सूत्रार्थ – रेवती आदि गण में पठित पातिपदिकों से अपत्य अर्थ में ठक् प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। रेवतीशब्दः आदिः येषां ते रेवत्यादयः, तेभ्यः रेवत्यादिभ्यः यहाँ तद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहि समास है। रेवत्यादिभ्यः यह पञ्चम्यन्त है। ठक् यह प्रथमान्त है।

तस्याऽपत्यम् यह सम्पूर्ण सूत्र अनुवर्तित होता है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः ये अधिकार सूत्र आते हैं। यहा सूत्रार्थ होता है– रेवती आदि गण में पठित पातिपदिकों से अपत्य अर्थ में ठक् प्रत्यय हो।

उदाहरण – रेवत्याः अपत्यम् यह लौकिक विग्रह है। उसके बाद रेवती ङस् स्थिति में रेवती इसका रेवत्यादिगण में पाठ है। अतः रेवत्यादिभ्यष्ठक् सूत्र से अपत्य अर्थ में ठक् प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप होने पर रेवती ङस् ठ यह स्थिति हुई। तत्पश्चात् प्रातिपदिक संज्ञा एवं सुब्लोप होने पर रेवती+ठ यह स्थिति हुई। तब –

28.21 ठस्येकः (७.३.५०)

सूत्रार्थ – अङ्ग से परे ठकार को इकादेश है।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है इस सूत्र में दो पद है। ठस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। इकः यह प्रथमान्त पद है। यहाँ अङ्गस्य इसको अधिकार है। अतः सूत्रार्थ होता है – अङ्ग से पर ठकार को इकादेश हो। इक यह आदेश अदन्त है। उदाहरण – रेवती ठ इस स्थिति में ठस्येकः इस सूत्र से ठ को इकादेश होता है। तत्पश्चात् रेवती + इक् स्थिति में किति च इससे आदिवृद्धिः होती है। तब रेवती के तकारोत्तरवर्ती ईकार की लोप होने पर विभक्ति कार्य होने पर रेवतिकः यह रूप बना।

28.22 जनपदशब्दात् क्षत्त्रियादञ् (४.१.१६१)

सूत्रार्थ – जनपद वाचक क्षत्रिय शब्द से अञ् हो, अपत्य अर्थ में।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। जनपदवाचकः शब्दः जनपदशब्दः तस्मात् जनपदशब्दात् यह पञ्चम्यन्त है। क्षत्त्रियात् यह भी पञ्चम्यन्त है। अञ् यह प्रथमान्त पद है।

तस्याऽपत्यम् यहाँ से अपत्यम् की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः ये अधिकार सूत्र आते हैं। यह सूत्रार्थ होता है – उदाहरण – पञ्चालस्य अपत्यम् यह लौकिक विग्रह है। पञ्चाल ङस् इस स्थिति में जनपद शब्द से क्षत्रियादञ् इस सूत्र से अञ् प्रत्यय होता है। अनुबन्ध लोप होकर पञ्चाल ङस् अ इस स्थिति में प्रातिपदिक संज्ञा होकर सुब्लोप होता है। उसके पश्चात् पञ्चाल अ स्थिति में आदिवृद्धि और अकार का लोप होता है। तब विभक्ति कार्य होने पर पाञ्चालः यह रूप बना।

28.23 कुरुनादिभ्यो ण्यः (४.१.१७२)

सूत्रार्थ – जनपद क्षत्रिय वाचक कुरु शब्दों से और नकारादि शब्दों से अपत्य अर्थ मे ण्यः प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। नकारः आदिर्येषां ते नादयः यह बहुव्रीहि समास है। कुरुश्च नादयश्च कुरुनादयः तेभ्यः कुरुनादिभ्यः यहाँ इतरेतरद्वन्द्व है। कुरुनादिभ्यः यह पञ्चम्यन्त है। ण्यः यह प्रथमान्त पद है।

तस्याऽपत्यम् यह सम्पूर्ण सूत्र अनुवर्तित होता है। जनपद शब्दात् क्षत्रियादञ् यहाँ से जनपद शब्दात् क्षत्रियात् यह पद अनुवर्तित होता है। प्रत्ययः परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः ये अधिकार सूत्र

टिप्पणियाँ

आते हैं। अत: सूत्रार्थ होता है – जनपद क्षत्रिय वाचक कुरु शब्दों से और नकारादि शब्दों से अपत्य अर्थ मे ण्य प्रत्यय हो।

उदाहरण – कुरो: अपत्यम् यह लौकिक विग्रह है। कुरु ङस् स्थिति में कुरु शब्द जनपद विशेष क्षत्रिय का वाचक है। अत: कुरुनादिभ्यो ण्य: इस सूत्र में अपत्य अर्थ में ण्य प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् अनुबन्ध लोप होने पर प्रातिपदिक संज्ञा और सुप् का लोप होता है। उसके बाद कुरु + अ स्थिति में ओर्गुण: इस से उकार को गुण ओकार होता है। तब वान्तो यि प्रत्यये सूत्र से ओकार को अवादेश होता है। तत्पश्चात् आदिवृद्धि और विभक्ति कार्य होने पर 'कौरव्य:' यह रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार नैषध्य: इत्यादि में उसी प्रकार होगा।

28.24 ते तद्राजा: (४.१.१७९)

सूत्रार्थ – जनपदशब्दात् क्षत्त्रियादञ् सूत्र से विहित अञादय प्रत्यय तद्-राज संज्ञक हो।

सूत्र व्याख्या– यह संज्ञा सूत्र है।इसमें दो पद है। ते यह प्रथमान्त पद है। तद्राज यह भी प्रथमान्त पद है। सूत्रार्थ – तत् शब्द से पूर्व का परामर्श होता है। अत: सूत्रार्थ होता है – जनपदशब्दात्क्षत्त्रियादञ् सूत्र से विहित प्रत्यय अञ्, अण्, ङ्यण्, ण्य ये चार तद्राज संज्ञक है। अष्टाध्यायी आदि में इत् भी तद्राजप्रत्यय प्राप्त होता है।

28.15 तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम् (२.४.६२)

सूत्रार्थ – बहुत्व की विवक्षा में तद्-राज का लोप हो यदि बहुत्व तद् – राज के अर्थ का ही हो परन्तु स्त्री लिङ्ग में न हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। यहाँ पञ्च पद है। तद्राजस्य षष्ठ्यन्त है। बहुषु यह सप्तम्यन्त है। तेन यह तृतीयान्त है। एव यह अव्यय पद है।

ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञो: यहाँ से लुग् इसकी अनुवृत्ति होती है। अत: यह सूत्रार्थ होता है। – बहुत्व की विवक्षा में तद्-राज का लोप हो यदि बहुत्व तद् – राज के अर्थ का ही हो परन्तु स्त्री लिङ्ग में न हो।

उदाहरण – पञ्चालस्य अपत्यानि अथवा पाञ्चालानां जनपदानां राजानो यह लौकिक विग्रह है।पञ्चाल ङस् इस स्थिति में जनपद सूत्र से अञ् प्रत्यय होकर प्रक्रिया कार्य हाने पर का पाञ्चाल: यह रूप होता है। यहाँ पाञ्चाल शब्द तो अञ्प्रत्ययान्त है। अत: पाञ्चाल शब्द की बहुत्व विवक्षा होने पर जस् प्रत्यय होता है। वह तद्राजा: इस सूत्र से तद्राजसंज्ञक होता है। यहाँ तद्राजसंज्ञक की बहुत्व विवक्षा है। अत: तद्राज सूत्र से तद्राजसंज्ञक प्रत्यय का लोप होता है। तदनन्तर निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपाय: इस से आदि वृद्धि का अभाव होता है। तब प्रथमयो: पूर्वसवर्ण: इस से सवर्णदीर्घ होकर प्रक्रिया कार्य में पञ्चाला: यह रूप है।

पाठगत प्रश्न 28.4

1. ठक् प्रत्यय विधायक सूत्र कौन सा है?
2. 'ठ' को क्या आदेश होता है?
3. पाञ्चालः यहाँ किस सूत्र से कौन सा प्रत्यय है?
4. कुरुनादिभ्यः से कौन सा प्रत्यय होता है?
5. तद्राजसंज्ञाविधायक सूत्र कौन सा है।
6. पञ्चालाः यहाँ तद्राज का लुक् किस सूत्र से होता है?

पाठ का सार

इस पाठ में अपत्य अर्थ में प्रत्यय विधान किया जाता है। जैसे उपगोः अपत्यम् यह विग्रह होने पर तस्याऽपत्यम् इस सूत्र से अण्, प्रत्यय का विधान होता है। अर्थात् तद्धितवृत्ति उपगु सम्बन्धी अपत्य यह अर्थ आता है। और भी इस पाठ में अपत्य अर्थ में अञ्, ठक्, अण्, फक्, और इञ् इन प्रत्ययों का विधान किया जाता है।

और गोत्रापत्य, युवापत्य आदि संज्ञा भी इस प्रकरण में स्थापित है। गौत्रापत्य और युवापत्य अर्थ प्रत्ययों का विधान होता है। तद्राजसंज्ञक प्रत्यय का बहुत्व गम्यमान होने से लोप होता है। और इस प्रकरण में न केवल अपत्य अर्थ में तद्धित प्रत्ययों का विधान होता है अपि तु अपत्यभिन्नार्थ भवहितादि अर्थ में भी तद्धित प्रत्यय होते हैं। यथा पुंसु भवः यह विग्रह होने पर भवार्थ में सन् प्रत्यय करने पर प्रकिया कार्य में पौंस्नः यह रूप है। परन्तु अपत्यार्थ में अधिक प्रत्यय होते हैं। अतः अपत्याधिकार नाम होता है।

विशेषशब्दावली

1. **आदिवृद्धि** – तद्धितेष्वचामादेः और किति च इत्यादि सूत्र से ञित्, णित् और कित् परे रहते आदि अच् की वृद्धि होती है। यथा उपगोः अपत्यम् यहाँ अण्-प्रत्यय होता है। यह णित् प्रत्यय है। अतः उपगु इस शब्द का आदि अच् उकार है। अतएव उसके ही आदि अच् के उकार की वृद्धि होती है।

2. **सौत्रत्वात् लुक्** – छन्द के अनुसार सूत्र होते हैं यह महाभाष्यकार का वचन है। अतः छन्द के मेलन के लिए कहीं विभक्ति का अदर्शन होता है। यथा प्रकृत प्रकरण में तस्यापत्यम् इस सूत्र में तस्य इस शब्द से पञ्चमी आई है। परन्तु सूत्र में समागत पञ्चमी का अदर्शन होता है। अतः शास्त्र में कहा जाता है – सौत्रत्व होने से लोप होता है।

3. **विभक्तिविपरिणाम** – लोक में जैसे विभक्तियों का प्रयोग होता है,वैसे शास्त्र में कभी अन्यथा भी होता है। गर्गादिभ्यो यञ् इस सूत्र में तस्याऽपत्यम् यहाँ से अपत्यम् यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित

होता है। परन्तु सूत्र में प्रथमान्त अपत्यशब्द का तो सप्तमीत्व होने से परिवर्तन होता है। यह ही विभक्ति विपरिणाम है।

पाठांत प्रश्न

1. 'तस्यापत्यम्' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. 'अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम्' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
3. 'एको गोत्रे' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
4. 'गार्ग्य:' यह रूप सिद्ध कीजिए।
5. 'जीवति तु वंश्ये युवा' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
6. 'गार्ग्यायण:' यह रूप को सिद्ध कीजिए।
7. दाक्षि: यह रूप सिद्ध कीजिए।
8. 'जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ्' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
9. राजन्य: यह रूप सिद्ध कीजिए।
10. 'तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम्' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
11. बाहवि: यह रूप सिद्ध कीजिए।
12. गाङ्ग: यह रूप सिद्ध कीजिए।
13. 'ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
14. ये चाऽभावकर्मणो: इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
15. पाञ्चाल: इस रूप को सिद्ध कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

यहाँ ऊपर में प्रदत्त प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं-

28.1

1. स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात् यह सूत्र है।
2. स्त्रीपुंसाभ्याम् यहाँ इतरेतरद्वन्द्व है।
3. षष्ठ्यन्त कृतसन्धि समर्थ पद से अपत्य अर्थ में पूर्वोक्त और आगे कहे जाने वाले प्रत्यय हो यह अर्थ है।

4. अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम् सूत्रम्।
5. गुण।
6. गोत्र में एक ही अपत्यप्रत्यय हो यह अर्थ है।

28.2

1. यञ-प्रत्यय।
2. गोत्र अर्थ में जो यञन्त और अञन्त है उनके अवयव (यञ् और अञ्) का लोप हो, यदि उन्हीं के अर्थ अर्थात् (अर्थात् गोत्र का) बहुत्व विवक्षित हो, किन्तु स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता।
3. जीवति तु वंश्ये युवा यह सूत्र है।
4. यञिञोश्च यह सूत्र।
5. इञ्-प्रत्यय।
6. इञ्-प्रत्यय।

28.3

1. अण्-प्रत्यय।
2. ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च
3. ढक्-प्रत्यय।
4. कनीन यह आदेश, अण्-प्रत्यय।
5. घ-प्रत्यय।
6. यकारादि तद्धित प्रत्यय परे रहते अन् को प्रकृतिभाव हो, परन्तु भाव और कर्म अर्थ में न हो।

28.4

1. रेवत्यादिभ्यष्ठक्।
2. इकादेश।
3. जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ् इस सूत्र से अञ्-प्रत्यय।
4. ण्य-प्रत्यय।
5. ते तद्राजाः यह सूत्र।
6. तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम्।

॥ अठाइसवां पाठ समाप्त॥